# चतुर्थं व्याप्तिलक्षणम्

## चतुर्थलक्षणहिन्दीव्याख्याकारः

**डॉ॰ महानन्द झा**

[न्यायाभिमत चतुर्विध प्रमाओं में अन्यतम प्रमा अनुमितिप्रमा शब्द से व्यवहृत होती है। वह अनुमिति परामर्शजन्य ज्ञानात्मिका है। अतः व्याप्तिज्ञान के विना परामर्श की उत्पत्ति नहीं हो सकती। इसलिए व्याप्तिज्ञान अनुमितिप्रमात्व व्यवस्थापन का हेतु है। उस व्याप्तिज्ञान में विषय-विधया प्रविष्ट व्याप्तिज्ञान क्या है? इस प्रकार की अन्तेवासी को जायमान जो जिज्ञासा, तन्निवृत्यर्थ व्याप्ति के स्वरूप का परिज्ञान कराना आवश्यक है। इसी बात का चिन्तन कर मणिकार ने जिज्ञासा वाक्य का **नन्वनुमितिहेतुव्याप्तिज्ञाने का व्याप्तिः?** इस वाक्य से उत्थापन किया, जिसका आशय यह है कि अनुमानं प्रमाणम् अनुमितिकरणतावच्छेदक धर्मवत्वात्। यहाँ पर अनुमानोद्देश्यक प्रामाण्यविधेयक अनुमिति कारणतावच्छेदकीभूत अनुमिति करणतावच्छेदक धर्मवत्व का अनुमान में निश्चय आवश्यक है। वह अनुमित्यात्मक प्रमा जनकतावच्छेदकीभूत व्याप्ति अव्यभिचरितत्वस्वरूपा है ऐसा पूर्वपक्षत्वेन प्रतिपादन किया गया है।

वह पूर्वपक्षीयाव्याप्ति कहीं अन्वयव्याप्ति स्वरूपा है, यथा—साध्याभाववदवृत्त्वि, साध्यवद्भिन्न साध्याभाव-वदवृत्तित्व, साध्यवत्प्रतियोगिकान्योन्याभावासामानाधिकरण्य, साध्यवदन्यावृत्तित्व ये चारों व्याप्ति अन्वयव्याप्ति हैं। इनका खण्डन जिस प्रकार केवलान्वयिस्थल में समन्वित नहीं होने के कारण किया गया है उसी प्रकार व्यतिरेकव्याप्ति रूप अव्यभिचरितत्व के व्याप्ति का निराकरण के लिए अव्यभिचरितत्त्व की व्यतिरेकव्याप्तिस्वरूपता भी चतुर्थ लक्षण

में प्रतिपादित किया गया है। क्योंकि व्यतिरेकव्याप्ति साध्याभावव्यापकीभूताभावप्रतियोगित्व रूपत्वेन प्रसिद्ध है, जैसे–पर्वतो वह्निमान् धूमात् यहाँ पर वह्न्यभाव का व्यापकीभूत जो अभाव वह धूमाभाव होगा, तत्प्रतियोगित्व धूम में है इसी प्रकार का यह चतुर्थलक्षण है। इस लक्षण का समन्वय "पर्वतो वह्निमान् धूमात्" यहाँ पर साध्यवह्नि, साध्या-भाववह्न्यभाव, तदधिकरण–जलह्रदनिष्ठ अत्यन्ताभाव–धूमाभाव, तत्प्रतियोगित्व धूम में जाएगा। धूमवान् वह्नेः यहाँ पर साध्य–धूम, साध्याभाव धूमाभाव, तदधिकरण–अयोगोलकनिष्ठअत्यन्ताभाव पद से वह्न्यभाव का ग्रहण सम्भव नहीं है अतः "धूमवान् वह्नेः" इस स्थल में अतिव्याप्ति दोष नहीं होगा।]

**चिन्तामणिः**

## सकलसाध्याभाववन्निष्ठाभावप्रतियोगित्वम्।

**माथुरी**

**सकलेति। साकल्यं साध्याभाववतो विशेषणम्, तथा च यावन्ति साध्याभावाधिकरणानि तन्निष्ठाभावप्रतियोगित्त्वं हेतोर्व्याप्तिरित्यर्थः।**

**धूमाद्यभाववज्जलह्रदादिनिष्ठाभावप्रतियोगित्वात् वह्न्यादावतिव्याप्तिरिति यावदिति साध्याभाववतो विशेषणम्। साध्याभावविशेषणत्वे तत्तद्ह्रदावृत्तित्त्वादिरूपेण यो वह्न्याद्यभावस्तस्यापि सकलसाध्याभावत्वेन प्रवेशात् तावदधि-करणाप्रसिद्ध्या असम्भवापत्तेः।**

साकल्यघटित चतुर्थलक्षण में सकल पद साध्याभावाधिकरण का विशेषण है ऐसा मथुरानाथ ने सकलं च तत्साध्याभाववत् ऐसी व्युत्पत्ति स्वीकृत कर सकल जो साध्याभावाधिकरण तन्निष्ठाभावप्रतियोगित्व व्याप्ति है यही व्यतिरेक व्याप्तिस्वरूप हो जाता है। यदि साकल्यपद साध्याभावाधिकरण का विशेषण न दें तो धूमाभावाधिकरण जलह्रदवृत्ति वह्न्यभाव का प्रतियोगित्व वह्नि में भी चला जाएगा। अतः धूम साध्यक

वह्नि हेतुकस्थल "धूमवान् वह्नेः" यहाँ पर अतिव्याप्ति हो जाएगी। जब साध्याभावाधिकरण विशेषणत्वेन सकल पद का उपादान करते हैं तब उक्त स्थल में यावत्साध्याभावाधिकरण पद से आयोगोलक भी सङ्गहीत हो जाएगा। अतः धूमाभावाधिकरण अयोगोलकनिष्ठ अत्यन्ताभाव पद से वह्न्यभाव का ग्रहण नहीं हो सकेगा। अतएव अतिव्याप्ति दोष नहीं होगा। इस प्रकार मथुरानाथ ने यावदर्थक सकल पद को साध्याभावाधिकरण का विशेषण प्रदर्शित किया है।

दीधितिकार रघुनाथ शिरोमणि ने साकल्यपद को साध्याभाववत् पद में तथा साध्य पद में भी विशेषण प्रदर्शित किया है। इस विषय में गदाधरभट्टाचार्य का यह कहना है कि साध्याभाववत् पद में सकल विशेषण के रहने पर ही साध्य में सकल पद की सार्थकता हो सकेगी। यदि साध्याभाववत् में सकल विशेषण नहीं कहेंगे तो नाना व्यक्ति साध्यक "पर्वतो वह्निमान् धूमात्" इत्यादि सद्धेतु स्थल में साध्याभाववत् यत्किञ्चित् एकाधिकरण महानसादि में पर्वतीय धूमाभाव के रहने से तत्प्रतियोगित्व धूम हेतु में चले जाने से साध्य में यावत् पद निवेश के विना ही लक्षण समन्वय होगा।

इसका आशय यह है कि यदि साध्य में यावदर्थक साकल्य पद का निवेश नहीं करेंगे तब नानाव्यक्ति साध्यकस्थल में पर्वतीय वह्नि व्यक्त्यभावाधिकरण महानस निष्ठ अभाव पद से धूमाभाव का ग्रहण नहीं हो सकता। अतः नानाव्यक्ति साध्यकस्थल में अव्याप्ति होगी। यदि यावदर्थक सकल पद को साध्य में विशेषण देते हैं तब यावत्साध्यान्तर्गत सकल वह्नि आ जायेंगे, तदभावाधिकरण कोई भी हेत्वधिकरण नहीं हो सकेगा अपितु जलह्रदादि होंगे तन्निष्ठाभाव पद से धूमाभाव का उपादान हो जाएगा, तत्प्रतियोगित्व धूम में जाने से लक्षण समन्वय हो जाएगा।

यदि साध्याभाववत् में यावदर्थक साकल्य का निवेश नहीं करेंगे तो धूमाभावाधिकरण जलह्रदनिष्ठ वह्न्यभाव प्रतियोगित्व के वह्नि में जाने से अतिव्याप्ति होगी। जब साकल्य को साध्याभावाधिकरण में विशेषण दे देंगे तो यावत् धूमाभावाधिकरण के अन्तर्गत तप्तायोगोलक भी आ जाएगा, तन्निष्ठाभाव पद से वह्न्यभाव नहीं लिया जा सकता। यही आशय

**"साकल्यं साध्याभाववति साध्ये च बोध्यम्"** दीधितिकार को अभिप्रेत है।

इस विषय में कि साध्याभाववत् में साकल्य विशेषण के रहने पर ही साध्य में साकल्य विशेषण की सार्थकता सम्भव है, यहाँ पर यह शंका उठती है कि साध्याभाववत् में साकल्य के विशेषण न रहने पर भी वह्निमान् पर्वतान्यत्वात् यहाँ पर साध्य में साकल्य विशेषण की सार्थकता हो सकती है। जैसे यदि साध्य में साकल्य विशेषण नहीं देते हैं तो यत्किञ्चित् वह्न्यभाव का अधिकरण पर्वत भी हो जाएगा उसमें पर्वतभिन्नत्व रूप हेतु का अभाव रहने से अतिव्याप्ति दोष होगा, क्योंकि यत्किञ्चित् वह्न्यभावाधिकरण पर्वतनिष्ठ पर्वतान्यत्वाभाव का प्रतियोगित्व ही पर्वतान्यत्व में चला जाएगा। जब साध्य में साकल्य विशेषण का उपादान कर देंगे तो सकल साध्य का अभाव पर्वत में न मिलकर ह्रद में ही मिलेगा, उस ह्रद में पर्वतान्यत्त्व ही विद्यमान है। अतः साध्याभावाधिकरणनिष्ठ अभाव पद से पर्वतान्यत्व का अभाव नहीं मिलेगा। अतएव तत्प्रतियोगित्व रूप व्याप्तिलक्षण के नहीं जाने से अतिव्याप्ति नहीं होगी, इस प्रकार की शंका कोई लोग उपस्थापित करते हैं लेकिन यह कहना उचित नहीं होगा। क्योंकि साकल्य विशेषण के साध्य में न रहने पर उक्तातिव्याप्ति वारण स्वरूप प्रयोजन होने पर जो साकल्य विशेषण का आगे वास्तविक प्रयोजन निर्दिष्ट किया गया है वह साध्याभाववत् में साकल्य विशेषण रहने पर ही सङ्गत हो सकता है। अतः प्रथम साध्याभाववत् का विशेषण साकल्य है तत्पश्चात् साध्य में साकल्य विशेषण दिया गया है।

यहाँ शङ्का उठती है कि जिस अतिव्याप्ति वारण करने के लिए साध्याभाववत् में साकल्य विशेषण दिया गया है उस अतिव्याप्ति का वारण यदि साध्याभाव में साकल्य विशेषण दे देने से ही हो जाए तो साकल्य विशेषण प्रथमोपस्थित साध्याभाव में ही समझना चाहिए न कि साध्याभावाधिकरण में। ऐसी आशंका होने पर जगदीश तर्कालंकार का यह कहना है कि यदि साकल्य को साध्याभाव का विशेषण दे देते हैं तो "वह्निमान् धूमात्" इसी स्थल में अव्याप्ति होगी वहाँ पर तत्तत्सपक्षावृत्तित्वावच्छिन्नाभाव (चत्वरावृत्तिर्नास्ति, महानसावृत्तिर्नास्ति) एवं

तत्तद्विपक्षावृत्तित्वाभाव (तद् ह्रदावृत्तिर्नास्ति) ये सभी सपक्षावृत्तित्वेन तथा विपक्षावृत्तित्वेन वह्निप्रतियोगिक अभाव है। इन समस्त अभावों का एकाधिकरण अप्रसिद्ध हो जाने से "वह्निमान् धूमात्" इत्यादि स्थलों में अप्रसिद्धि दोष हो जाएगा।

अतः साकल्य साध्याभाववत् में विशेषण है न कि साध्याभाव में। इस प्रकार से मथुरानाथ के मत में यावदर्थक साकल्य केवल साध्याभावाधिकरण में ही विशेषण प्रदर्शित किया गया है।

दीधितिकार ने साध्याभाववत् में तथा साध्य में भी साकल्य को विशेषण स्वीकार किया है। उनके मत की विवेचना करने वाले जगदीश तर्कालंकार तथा गदाधर भट्टाचार्य ने भी साध्य तथा साध्याभाववत् में इसकी विशेषणता स्वीकार किया है।

**"सकलसाध्याभाववन्निष्ठाभावप्रतियोगित्व"** इस चतुर्थ लक्षण में साध्याभाव साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकधर्मावच्छिन्न साध्यनिष्ठप्रतियोगिताक अभाव स्वरूप कहना चाहिए। यदि साध्यनिष्ठ प्रतियोगिता में साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्नत्व का निवेश न करेंगे तो समवाय सम्बन्धेन वह्न्यभाव का अधिकरण पर्वत हो जाएगा, तन्निष्ठाभाव पद से संयोग सम्बन्धेन धूमाभाव नहीं लिया जा सकेगा अतः वह्निमान् धूमात् यहाँ पर अव्याप्ति हो जाएगी। साध्यनिष्ठ प्रतियोगिता में साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्नत्व के निवेश करने पर लक्षणघटक अभाव पद से समवायसम्बन्ध से वह्न्यभाव नहीं ले सकेंगे, क्योंकि प्रकृत में समवाय सम्बन्ध साध्यतावच्छेदक सम्बन्ध नहीं है किन्तु संयोग सम्बन्ध से ही वह्न्यभाव लिया जाएगा, तदधिकरण पर्वतादि न होकर जलह्रदादि होंगे, तन्निष्ठाभाव प्रतियोगित्व धूम में चला जाएगा।

इसी प्रकार लक्षणघटक साध्यनिष्ठ प्रतियोगिता में साध्यतावच्छेदक धर्मावच्छिन्नत्व का निवेश नहीं करेंगे तो संयोग सम्बन्ध से वह्निघटोभयाभावाधिकरण पर्वतादि निष्ठ अभाव का प्रतियोगित्व धूम में नहीं जाने से उक्त स्थल में ही पुनरव्याप्ति हो जाएगी।

साध्यतावच्छेदक धर्मावच्छिन्नत्व विशेषण देने पर तादृश प्रतियोगिता में उभयत्वावच्छिन्नत्व है, न कि केवल साध्यतावच्छेदकधर्मावच्छिन्नत्व।

माथुरी

**न च द्रव्यं सत्त्वादित्यादौ द्रव्यत्वाभाववति गुणादौ सत्वादेर्विशिष्टाभावादि सत्त्वादतिव्याप्तिरिति वाच्यम्, तादृशाभावप्रतियोगितावच्छेदक हेतुतावच्छेदकवत्वस्येह विवक्षितत्वात्। प्रतियोगिता च हेतुतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्ना ग्राह्या, तेन द्रव्यत्वाभाववति गुणादौ सत्तादेः संयोगादि-सम्बन्धावच्छिन्नाभावसत्त्वेऽपि नातिव्याप्तिः।**

अतः अव्याप्तिदोष नहीं होगा। क्योंकि लक्षणघटक अभाव पद से संयोग सम्बन्ध से वह्न्यभाव ही होगा तदधिकरण ह्रदादिनिष्ठ अभाव प्रतियोगित्व धूम में रहने से अव्याप्तिदोष वारित हो जाएगा।

इस प्रकार साध्यनिष्ठ प्रतियोगिताक अभाव के परिष्कृत करने पर भी "द्रव्यं सत्त्वात्" यहाँ पर समवाय सम्बन्धेन द्रव्यत्वाभावाधिकरण गुणनिष्ठ विशिष्ट सत्ताभाव का प्रतियोगित्व विशिष्ट सत्ता में रह गया तथा विशिष्टं शुद्धान्नातिरिच्यते" इस न्याय से विशिष्ट सत्ता के शुद्ध सत्ता से अभिन्न होने के कारण द्रव्यत्वाभावाधिकरण गुण निष्ठ विशिष्ट सत्ताभाव की प्रतियोगिता सत्ता में भी चली गयी। अतः द्रव्यं सत्वात् यहाँ पर अतिव्याप्ति दोष होगा। इस दोष के परिहार के लिए **"यावत् साध्याभावाधिकरणनिष्ठ अभावप्रतियोगितावच्छेदक हेतुतावच्छेद-कवत्त्वम्"** ऐसी व्याप्ति बनानी पड़ेगी। ऐसा लक्षण बनाने पर उक्त स्थल में द्रव्यत्वाभावाधिकरण गुणनिष्ठ विशिष्ट सत्ताभाव का प्रतियोगितावच्छेदक विशिष्ट सत्तात्व ही होगा न कि सत्तात्व। यद्यपि विशिष्ट सत्ता और शुद्ध सत्ता एक ही है तथापि विशिष्ट सत्तात्वेन रूपेण विशिष्ट सत्ता द्रव्य में ही रहती है तथा सत्तात्वेन रूपेण सत्ता, द्रव्य-गुण-कर्म तीनों में रहती है।

प्रकृत स्थल में यदि सत्तात्व को हेतुतावच्छेदक न मानकर विशिष्ट सत्तात्व को स्वीकार किया जाएगा तब उक्त स्थल व्यभिचारी न होकर सद्धेतु हो जाएगा। यद्यपि तादृश हेतुतावच्छेदक हेतुतावच्छेदकवत्त्वम् ऐसा लक्षण करने पर भी द्रव्यं सत्वात् इसी स्थल में द्रव्यत्वाभावाधिकरण

गुणनिष्ठ अभाव पद से संयोग सम्बन्ध से सत्ताभाव लेकर पुनः अतिव्याप्ति हो जाएगी क्योंकि संयोग सम्बन्ध केवल दो द्रव्यों का ही होता है न कि जाति संयोग सम्बन्ध से कहीं रहती है। अतः संयोग सम्बन्ध से सत्ता का अभाव व्यधिकरण सम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिताक अभाव है और व्यधिकरणसम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिताक अभाव के केवलान्वयि होने से गुण में रहने में भी कोई बाधक नहीं है, अतः उक्त स्थल में अतिव्याप्ति होगी। अतएव "**यावत्साध्याभावाधिकरणनिष्ठाभावीय हेतुतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगितावच्छेदकवत्त्वं व्याप्तिः**" ऐसा कहना पड़ेगा।

यद्यपि साध्य में साकल्य विशेषण देने पर भी वह्निमान् धूमात् यहाँ पर वह्निघटोभयं नास्ति इस अभाव के साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोगिताक होने के कारण लक्षणघटक होने से तदधिकरण पर्वतनिष्ठ अभाव प्रतियोगित्व धूम में नहीं गया। अतः वह्निमान् धूमात् यहाँ अव्याप्ति लगी रहेगी। यदि साध्यनिष्ठ प्रतियोगिता में व्यासज्यवृत्तिधर्मानवच्छिन्न का निवेश कर इस अव्याप्ति के वारण का प्रयास करें तो "वह्नि धूमोभयवान् वह्नेः" यहाँ पर व्यासज्यवृत्तिधर्मानवच्छिन्न प्रतियोगिताक साध्याभाव पद से वह्न्यभाव तथा धूमाभाव का ही ग्रहण सम्भव है तदधिकरण ह्रदादिनिष्ठ अभाव का प्रतियोगित्व वह्नि में चला जाएगा। अतः अतिव्याप्ति होगी।

एतद्दोष परिहार के लिए साध्यतावच्छेदक भिन्नः यः व्यासज्यवृत्तिधर्मः तदनवच्छिन्न प्रतियोगिताकत्व का यदि साध्यनिष्ठ प्रतियोगिताकाभाव में निवेश करते हैं तब लाघवात् साध्यतावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोगिताकत्व को ही अभाव में विशेषण देना उचित होगा। इसी आशय से दीधितिकार ने "साध्याभावो वा साध्यतावच्छेदकावच्छिन्न-प्रतियोगिताको ग्राह्यः" ऐसा कहा है। विपक्ष के एक देश में व्यभिचारी हेतु का अभाव लेकर अतिव्याप्ति वारण करने के लिए साध्याभाववत् में साकल्य विशेषण दिया गया है, ऐसा दीधितिकार ने प्रतिपादित किया है।

## माथुरी

**साध्याभावश्च साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताको ग्राह्यः, अन्यथा पर्वतादावपि वह्न्यादेर्विशिष्टाभावादिसत्त्वेन समवायादिसम्बन्धावच्छिन्नवह्न्यादिसामान्याभावसत्त्वेन च यावदन्तर्गततया तन्निष्ठाभावप्रतियोगित्वाभावाद् धूमस्यासम्भवः स्यात्।**

साध्याभाव में साध्यतावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोगिताकत्व के निवेश न करने पर नानाव्यक्ति साध्यक सद्धेतु में एकैक साध्याभाव व्यक्त्यधिकरण निष्ठाभाव प्रतियोगित्व के हेतु में न रहने के कारण अव्याप्ति होगी, अतः साध्याभाव में साध्यतावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोगिताकत्व का निवेश है। इसी प्रकार यदि साध्य में साकल्य विशेषण नहीं देंगे तब अव्याप्यवृत्ति साध्यक व्याप्यवृत्ति सद्धेतु स्थल में अर्थात् "कपि संयोगी एतद्वृक्षत्वात्" यहाँ पर कपि संयोगत्वावच्छिन्न यत्किञ्चित् संयोगाधिकरण एतद्वृक्ष में एतद्वृक्षस्वरूप हेतु के अभाव नहीं होने के कारण साध्याभावाधिकरण निष्ठाभाव प्रतियोगित्व एतद्वृक्षत्व में नहीं गया। अतः अव्याप्ति दोष की आपत्ति होगी। साकल्य विशेषण देने पर सकल साध्य के अभाव का अधिकरण जो गुणादि, तन्निष्ठ अभाव पद से एतद्वृक्षत्वाभाव भी गृहीत हो जाएगा, अतः तत् प्रतियोगित्व एतद्वृक्षत्व में चले जाने से अव्याप्ति नहीं होगी।

यहाँ नानाव्यक्ति साध्यकत्व का अर्थ व्यधिकरण साध्यद्वयवृत्ति साध्यतावच्छेदककत्व है। जैसे पर्वतो वह्निमान् धूमात् यहाँ पर महानसीय वह्नि एवं पर्वतीय वह्नि दोनों ही व्यधिकरण है तथा साध्यान्तर्गत उनमें साध्यतावच्छेदक वह्नित्व विद्यमान है, अतः इस स्थल को नानाव्यक्तिसाध्यक स्थल कहते हैं। इसी कारण एतद् व्यक्तिवृत्ति यावद्धर्मवान् एतत्वात् इत्यादि नाना व्यक्तिसाध्यकस्थल में अव्याप्ति न होने पर भी कोई अनुपपत्ति नहीं होती।

**माथुरी**

**न च कपिसंयोगी एतद्वृक्षत्वात् इत्यादौ एतद्वृक्षस्यापि तादृशसाध्याभाववत्त्वेन यावदन्तर्गततया तन्निष्ठाभावप्रतियोगित्वाभावादेतद्वृक्षत्वस्याव्याप्तिरिति वाच्यम्, किञ्चिदनवच्छिन्नायाः साध्याभावाधिकरणताया इह विवक्षितत्वात्। इत्थञ्च किञ्चिदनवच्छिन्नायाः कपिसंयोगाभावाधिकरणताया गुणादावेव सत्त्वात् तत्र च हेतोरप्यभावसत्त्वान्नाव्याप्तिः।**

**न च कपिसंयोगाभाववान् सत्त्वादित्यादौ साध्याभावस्य कपिसंयोगादेर्निरवच्छिन्नाधिकरणत्वाप्रसिद्ध्या अव्याप्तिरिति वाच्यम्, केवलान्वयिन्यभावादित्यनेन ग्रन्थकृतैव एतद्दोषस्य वक्ष्यमाणत्वात्।**

इस लक्षण में साध्याभाव तथा हेत्वभाव दोनों में ही प्रतियोगी व्यधिकरणत्व विशेषण आवश्यक है अन्यथा साध्याभाव में यदि प्रतियोगी वैयधिकरण्य का निवेश नहीं करेंगे तो कपिसंयोगी एतद्वृक्षत्वात् यहाँ कपिसंयोग रूप साध्याभावाधिकरण मूलावच्छिन्न एतद्वृक्ष में एतद्वृक्षत्वाभाव के नहीं रहने से अव्याप्ति हो जाएगी। साध्याभाव में प्रतियोगी वैयधिकरण्य विशेषण प्रदान करने से एतद्वृक्ष में प्रतियोगिव्यधिकरण होता हुआ कपिसंयोगाभाव नहीं रहेगा किन्तु प्रतियोगिव्यधिकरण कपिसंयोगाभाव का अधिकरण एतद् मूल होगा, तन्निष्ठाभाव एतद्वृक्षत्वाभाव, तत्प्रतियोगित्व के एतद्वृक्षत्व में रहने से अव्याप्तिदोष वारित हो जाएगा। इसी प्रकार यदि हेत्वभाव में प्रतियोगि वैयधिकरण्य विशेषण का उपादान नहीं करेंगे तो पृथिवी कपिसंयोगात् यहाँ पर पृथिवीत्वाभावाधिकरण जलनिष्ठ कपिसंयोगाभाव का प्रतियोगित्व ही कपिसंयोग रह जाएगा। अतः कपिसंयोगात्मक अव्याप्यवृत्तिहेतुक उक्त स्थल में अतिव्याप्ति होगी। तादृश विशेषण के हेत्वभाव में उपादान करने पर पृथिवीत्वाभावाधिकरण जल में प्रतियोगिव्यधिकरण कपि संयोगाभाव गृहीत नहीं हो सकेगा। जल में कालभेद से कपिसंयोग तथा कपिसंयोगाभाव दोनों ही विद्यमान है। इस प्रकार से साध्याभाव तथा हेत्वभाव में प्रतियोगिवैयधिकरण्य का निवेश

कर गदाधर भट्टाचार्य ने उक्त दोषों का परिहार किया है जो कि दीधितिकाराभिमत है।

"अभावद्वये प्रतियोगिव्यधिकरणत्वं बोध्यम्" ऐसा दीधितिग्रन्थ में स्पष्टतया उल्लिखित है। अभावद्वय में प्रतियोगी वैयधिकरण्य प्रतियोग्यधिकरणावृत्तित्वरूप नहीं कहा जा सकता। यदि प्रति- योग्यधिकरणावृत्तित्व ही प्रतियोगि वैयधिकरण्य पदार्थ हो तब कपिसंयोगी एतद्वृक्षत्वात् इत्यादि अव्याप्यवृत्ति साध्यकस्थल में प्रतियोग्यधिकरणावृत्ति कपिसंयोगात्मक साध्य का अभाव ही अप्रसिद्ध हो जाएगा। एवं द्रव्यं संयोगात् इत्यादि अव्याप्यवृत्ति हेतुकस्थल में प्रतियोग्यधिकरणावृत्ति संयोगाभाव रूप हेत्वभाव के अप्रसिद्ध होने से अव्याप्ति होगी। अतः प्रतियोगी व्यधिकरणत्व प्रतियोग्यधिकरणावृत्तित्व स्वरूप नहीं है। किन्तु प्रतियोग्यनधिकरणवृत्तित्व स्वरूप है, ऐसा स्वीकार करने पर लक्षण का स्वरूप "**प्रतियोग्यनधिकरणवृत्तित्त्वविशिष्टसाध्याभावाधिकरणेषु यावत्सु प्रतियोग्यनधिकरणवृत्तित्वविशिष्टः सन् वर्तते यः अभावः तत्प्रतियोगित्वं व्याप्तिः।**" अर्थात् अपने प्रतियोगी के अनधिकरण में रहने वाला जो साध्याभाव, उसके समस्त अधिकरण में प्रतियोग्यनधिकरणवृत्ति होता हुआ विद्यमान जो अभाव तत्प्रतियोगित्व ही व्याप्ति है। इस प्रकार से प्रतियोगी व्यधिकरण पदार्थ के निर्वचन करने से अव्याप्यवृत्तिसाध्यक कपिसंयोगी एतद्वृक्षत्वात् इस स्थल में कपिसंयोगानधिकरण गुणादिवृत्तित्वोपलक्षित कपिसंयोगाभाव के हेत्वधिकरण में रहने पर भी अव्याप्ति नहीं होगी। क्योंकि प्रतियोग्यनधिकरण गुण में रहने वाला कपिसंयोगाभाव कथमपि एतद्वृक्ष में नहीं रहेगा। इसका अधिकरण गुणादि ही होंगे, तन्निष्ठाभावप्रतियोगित्व एतद्वृक्षत्व में रह गया। अतः अव्याप्ति दोष नहीं होगा। एवम् एतद्वृक्षत्ववान् कपिसंयोगात् इत्यादि व्यभिचारी स्थल में कपिसंयोगाभाव के सकल एतद्वृक्षत्वाभावाधिकरण में रहने पर भी अतिव्याप्ति नहीं होगी, क्योंकि एतद्वृक्षत्वाभावाधिकरणान्तर्गत अपर वृक्ष में प्रतियोगी व्यधिकरण कपि संयोगाभाव नहीं रह सकता। इस प्रकार से "प्रतियोग्यनधिकरण साध्याभावाधिकरण यावद् वृत्ति स्व प्रतियोग्यनधिकरणताक अभाव प्रतियोगित्वम्" ऐसा निष्कृष्ट लक्षण किया गया है।

एतल्लक्षण घटक प्रथम में प्रतियोग्यनधिकरणत्व साध्यतावच्छेदक सम्बन्ध से प्रतियोग्यनधिकरणत्व का प्रवेश किया गया है तथा द्वितीय प्रतियोग्यनधिकरणत्वघटक प्रतियोग्यनधिकरणत्व हेतुतावच्छेदकसम्बन्ध से निवेश किया गया है। यदि साध्याभावविशेषणीभूत प्रतियोग्यनधिकरणत्व घटक प्रतियोग्यधिकरणत्व साध्यतावच्छेदक सम्बन्ध से प्रविष्ट न करेंगे तो अयमात्मा आत्ममहाकालान्यतरत्वात् इस स्थल में आत्मत्वाभावाधिकरण काल में आत्मत्व रूप साध्य का अभाव कालिक सम्बन्ध से आत्मत्व रूप प्रतियोगी का समानाधिकरण ही हो गया। अतः साध्यतावच्छेदक समवाय सम्बन्ध से प्रतियोगी व्यधिकरण आत्मत्वाभाव का अधिकरण घट-पटादि हो गया, उसमें प्रतियोगी व्यधिकरण अभाव हेत्वभाव नहीं होगा। अतः अतिव्याप्ति नहीं होगी। इसी प्रकार हेत्वभाव घटकीभूत प्रतियोग्यनधिकरणत्व यदि हेतुतावच्छेदक सम्बन्ध से निविष्ट नहीं करेंगे तो वह्निमान् धूमात् यहाँ पर प्रतियोगि व्यधिकरण साध्याभावाधिकरण ज्ञान में विषयिता सम्बन्ध से धूमात्मक प्रतियोगी के रहने के कारण वह्न्यभावाधिकरण निष्ठ अभाव पद से धूमाभाव भी गृहीत नहीं हो सकेगा। अतः वह्निमान् धूमात् यहाँ पर भी अव्याप्ति हो जाएगी। जब हेत्वभावघटक जो प्रतियोग्यनधिकरणत्व तद्घटक प्रतियोग्यधिकरणता को हेतुतावच्छेदक सम्बन्ध से प्रविष्ट करते हैं तो संयोग सम्बन्ध से धूम का अनधिकरण वह्न्यभावाधिकरण ज्ञान हो जाएगा। अतः उसमें रहने वाला धूमाभाव प्रतियोगी व्यधिकरण हो जाएगा, तत्प्रतियोगित्व के धूम में चले जाने से अव्याप्ति वारित हो जाएगी।

इस प्रकार से गदाधरभट्टाचार्य ने चतुर्थ लक्षण घटक साध्याभाव अर्थात् हेत्वभाव में प्रतियोगी व्यधिकरणत्व का निवेश कर दोषों उद्धार किया। इसी प्रकार जगदीश तर्कालंकार ने भी साध्याभाव में प्रतियोगी वैयधिकरण्य का निवेश किया। उन्होंने **"साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोगिनो यदधिकरणं तद्वृत्तित्वं प्रतियोगिव्यधिकरणत्वम्"** ऐसा कहा। यदि इस प्रकार का प्रतियोगि वैयधिकरण्य साध्याभाव में निवेश न करेंगे तो धूमाभावाधिकरण अयोगोलक में कालिक सम्बन्ध से धूम के रहने के कारण धूमाभाव प्रतियोगि व्यधिकरण नहीं हो सकेगा, क्योंकि धूमाभाव के प्रतियोगी धूम का अधिकरण ही कालिक सम्बन्ध से

अयोगोलक हो जाएगा। जब साध्यतावच्छेदक सम्बन्ध से प्रतियोगि वैयधिकरण्य का निवेश करेंगे तो साध्यतावच्छेदक संयोग सम्बन्ध से धूम का अनधिकरण अयोगोलक हो जाएगा। अतः प्रतियोगिव्यधिकरण धूमाभाव का अधिकरण ही अयोगोलक हो गया, तन्निष्ठाभाव वह्न्यभाव के नहीं मिलने से अतिव्याप्ति होगी।

इसी प्रकार हेत्वभाव में प्रतियोगिवैयधिकरण्य भी प्रतियोगिता-वच्छेदक सम्बन्ध से प्रतियोग्यनधिकरणत्व घटित ही कहना चाहिए। यदि हेत्वभाव में प्रतियोगितावच्छेदक सम्बन्ध से प्रतियोग्यनधिकरणत्व का निवेश न करेंगे तब अयमात्मा ज्ञानात् यहाँ पर आत्मत्वाभावाधिकरण घट में विद्यमान ज्ञान रूप हेतु का अभाव विषयतासम्बन्ध से प्रतियोगी समानाधिकरण ही हो जाएगा। अतः प्रतियोगितावच्छेदक सम्बन्ध का प्रतियोगि व्यधिकरण की कुक्षि में प्रवेश आवश्यक है, ऐसा होने पर प्रकृत में समवाय सम्बन्ध से ज्ञानाभाव ही घट में गृहीत होगा उसका प्रतियोगितावच्छेदक सम्बन्ध समवाय है। उस समवाय सम्बन्ध से ज्ञान स्वरूप प्रतियोगी का अनधिकरण साध्याभावाधिकरण घट हो गया। अतः साध्याभावाधिकरण निष्ठ प्रतियोगि व्यधिकरण अभाव पद से ज्ञानाभाव का ग्रहण हो जाएगा, तत्प्रतियोगित्व के ज्ञान में चले जाने से लक्षण का समन्वय हो जाएगा। इस प्रकार से प्रतियोगि वैयधिकरण्य पदार्थ का निर्वचन जगदीश तर्कालंकार ने किया। इसी प्रकार जगदीश के मतानुसार भी साध्याभाव को साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्न साध्यतावच्छेदकावच्छिन्न प्रतियोगिताक अभाव कहना चाहिए, तथा हेत्वभाव को भी हेतुतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्न हेतुतावच्छेदका- वच्छिन्न प्रतियोगिताक कहना चाहिए।

साध्यनिष्ठ प्रतियोगिताकाभावस्वरूप साध्याभावीय साध्यनिष्ठ प्रतियोगिता में यदि साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्नत्व का प्रवेश नहीं करेंगे तो समवाय सम्बन्ध से वह्निर्नास्ति इत्याकारक वह्न्यभावाधिकरण पर्वत निष्ठ अभाव पद से धूमाभाव का ग्रहण न होने के कारण वह्निमान् धूमात् यहाँ अव्याप्ति होगी। साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्नत्व के प्रवेश करने पर संयोग सम्बन्धावच्छिन्न प्रतियोगिताकाभावाधिकरण पर्वतादि नहीं अपितु ह्रदादि होंगे तन्निष्ठाभावप्रतियोगित्व के धूम में रहने के कारण

लक्षण समन्वय हो जाएगा। इसी तरह संयोग सम्बन्ध से तत्तद् वह्निव्यक्तिर्नास्ति वह्निघटोभयं वा नास्ति इत्याद्याकारक अभाव को लेकर अव्याप्ति वारण करने के लिए साध्यनिष्ठ प्रतियोगिता में साध्यतावच्छेदक- मात्रावच्छिन्नत्व का प्रवेश किया गया है। इस तरह साध्याभाव पदार्थ का विवेचन तीनों ही व्याख्याकारों का एक समान ही है। हेत्वभाव को प्रतियोगितावच्छे-दकावच्छिन्न प्रतियोगि व्यधिकरण कहना चाहिए तथा हेतु निष्ठ प्रतियोगिता को भी हेतुतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्न कहनी चाहिए।

एतल्लक्षणघटक हेत्वभाव में विद्यमान प्रतियोगि वैयधिकरण्यघटक स्वप्रतियोगितावच्छेकावच्छिन्नत्व का यदि निवेश नहीं करेंगे तो द्रव्यं विशिष्ट सत्वात् यहाँ अव्याप्ति होगी। प्रतियोगि व्यधिकरण साध्याभाव पद से द्रव्यत्वाभाव लिया जाएगा, इस द्रव्यत्वाभाव का अधिकरण गुण होगा, तन्निष्ठ जो विशिष्ट सत्ताभाव है उसका प्रतियोगी जो विशिष्ट सत्ता वह शुद्ध सत्ता से अनतिरिक्त होने के कारण विशिष्ट सत्ताभाव का प्रतियोगी शुद्ध सत्ता भी हो गया, उसका अधिकरण ही साध्याभावाधिकरण गुण हो गया। अतः प्रतियोगी व्यधिकरण साध्याभावाधिकरण निष्ठ अभाव पद से विशिष्टसत्ताभाव नहीं लिया जा सकेगा, अतः अव्याप्ति हो जाएगी।

जब प्रतियोगितावच्छेकावच्छिन्नानधिकरणत्व घटित निवेश करेंगे तब साध्याभावाधिकरण गुणनिष्ठ जो विशिष्ट सत्ताभाव तादृश अभाव प्रतियोगितावच्छेदक विशिष्ट सत्तात्वावच्छिन्न का अनधिकरण साध्याभावाधिकरण गुण हो गया अतः तादृश अभाव के प्रतियोगि व्यधिकरण होने के कारण तत्प्रतियोगित्व विशिष्ट सत्ता में चले जाने से अव्याप्ति वारित हो जाएगी।

साध्याभाव में जो प्रतियोगि वैयधिकरण्य है उसका भी अर्थ प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नानधिकरण वृत्ति करना चाहिए। यदि प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नानधिकरणवृत्ति अर्थ नहीं करेंगे तो गुणकर्मान्यत्व विशिष्ट जातेः यहाँ अतिव्याप्ति हो जाएगी। साध्याभावाधिकरण गुण में विद्यमान जो विशिष्टसत्ताभाव तत्प्रतियोगी जो विशिष्ट सत्ता, उससे अनतिरिक्त जो शुद्धसत्ता उसका सामानाधिकरण्य ही विशिष्ट सत्ताभाव

है। अतः साध्याभावाधिकरण गुण में विशिष्टसत्ताभाव प्रतियोगी व्यधिकरण नहीं होगा किन्तु जात्यादि में ही होगा, उसमें विद्यमान अभाव पद से जात्यभाव भी गृहीत हो जाएगा तत्प्रतियोगित्व जाति में चला जाएगा। अतः विशिष्ट सत्तावान् जातेः यहाँ अतिव्याप्ति हो जाएगी। जब साध्याभाव घटकीभूत प्रतियोगि वैयधिकरण्य का प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्न वैयधिकरण्य अर्थ करेंगे तो विशिष्ट सत्ताभाव का प्रतियोगितावच्छेदक जो विशिष्ट सत्तात्व तदवच्छिन्न का वैयधिकरण्य गुणवृत्तिविशिष्ट सत्ताभाव में चला जाएगा। अतः गुण में प्रतियोगि व्यधिकरण विशिष्ट सत्ताभाव रह गया, उसमें जात्यभाव नहीं मिलेगा अतः तत्प्रतियोगित्व जाति में नहीं जाने से अतिव्याप्ति दोष नहीं होगा।

**माथुरी**

**न च पृथिवी कपिसंयोगादित्यादौ पृथिवीत्वाभाववति जलादौ यावत्येव कपिसंयोगाभावसत्वादतिव्याप्तिरितिवाच्यम्, तन्निष्ठपदेन तत्र निरवच्छिन्नवृत्तिमत्त्वस्य विवक्षितत्वात्। इत्थञ्च पृथिवीत्वाभावाधिकरणे जलादौ यावदन्तर्गते निरवच्छिन्न-वृत्तिमान् अभावो न कपिसंयोगाभावः, किन्तु घटत्वाद्यभाव एव, तत्प्रतियोगित्वस्य हेतावसत्त्वान्नातिव्याप्तिः।**

इस प्रकार साध्याभाव एवं हेत्वभाव में प्रतियोगिव्यधिकरणत्व का निवेश करना चाहिए। यदि हेत्वभाव में प्रतियोगि वैयधिकरण्य का निवेश नहीं करेंगे तब "एतद्वृक्षत्ववान् कपिसंयोगात्" यहाँ पर अतिव्याप्ति होगी। एतद् वृक्षत्वाभाव रूप साध्याभाव का अधिकरण जो घटादि है उसमें वृत्ति अभाव करके कपिसंयोगाभाव ले लिया जाएगा, तत्प्रतियोगिता-वच्छेदक ही हेतुतावच्छेदक कपिसंयोगत्व हो गया, तद्वत्त्व के कपिसंयोग में रहने से अतिव्याप्ति दोष हो जाएगा।

एवं साध्याभाव में यदि प्रतियोगि वैयधिकरण्य का निवेश नहीं करेंगे तो "कपिसंयोगी एतद्वृक्षत्वात्" यहाँ पर कपिसंयोगाभाव का अधिकरण एतद्वृक्ष होगा, तन्निष्ठाभाव करके एतद्वृक्षत्व का अभाव गृहीत न हो सकेगा, अतः अव्याप्ति दोष का प्रसङ्ग होगा। जब साध्याभाव

में प्रतियोगि व्यधिकरणत्व का निवेश कर देंगे तब जिस वृक्ष में कपिसंयोग विद्यमान है उसमें रहने वाला कपिसंयोगाभाव प्रतियोगिव्यधिकरण नहीं होगा अपितु हेत्वधिकरण से भिन्न भूतलादि देश में ही कपिसंयोगाभाव होगा। उस भूतलादि देश में विद्यमान प्रतियोगिव्यधिकरण एतद्वृक्षत्व रूप हेतु का अभाव गृहीत हो जाएगा, तत्प्रतियोगित्व हेतु में चला जाएगा। अतः उक्त स्थल में अव्याप्ति नहीं होगी।

साध्याभाव में प्रविष्ट प्रतियोगि व्यधिकरण का अर्थ साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्न यदभावीय प्रतियोगिनिष्ठ आधेयता का जो निरूपक हो उससे भिन्न में रहने वाला अभाव ही प्रतियोगि व्यधिकरण है ऐसा अर्थ अभिप्रेत है। लक्षण का स्वरूप है–**साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्न स्वप्रतियोगिनिष्ठ आधेयतानिरूपकाधिकरणभिन्ने वृत्तिः यः साध्याभावः तदधिकरणयावन्निष्ठप्रतियोगिव्यधिकरणाभावप्रतियोगित्वं व्याप्तिः।"** ऐसा लक्षण करने पर कपिसंयोगी एतद्वृक्षत्वात् यहाँ पर अव्याप्ति नहीं लगेगी। कपिसंयोगाभाव का प्रतियोगी जो कपिसंयोग, उसका अनधिकरण गुण है, उसमें विद्यमान जो कपिसंयोगाभाव रूप साध्याभाव, उसका अधिकरण जो गुणादि उसमें एतद्वृक्षत्व का अभाव विद्यमान है, तत्प्रतियोगित्व एतद्वृक्षत्व में रह गया। इस पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि कपिसंयोग का अनधिकरण जो गुण उसमें विद्यमान जो कपिसंयोगाभाव उसका अधिकरण एतद्वृक्ष भी हो गया। उसमें एतद्वृक्षत्वरूप हेतु का अभाव न मिलने के कारण अव्याप्ति बनी रहेगी, ऐसा नहीं कह सकते इस दोष के परिहार के लिए "स्वप्रतियोग्यनधिकरणवृत्तित्वविशिष्टत्व" विशेषण साध्याभाव में निविष्ट करेंगे। ऐसा करने पर कपिसंयोगाभाव का प्रतियोगी जो कपिसंयोग उसका अनधिकरण गुण हुआ, उसमें रहने वाला जो कपिसंयोग है उसका अधिकरण गुण ही होगा न तु एतद्वृक्ष। अतः प्रतियोगिव्यधिकरण साध्याभावाधिकरण पद से गुण ही लिया जाएगा। उसमें एतद्वृक्षत्वाभाव मिलने के कारण उक्त स्थल में अव्याप्ति दोष नहीं होगा।

कपिसंयोगी एतद्वृक्षत्वात् यहाँ पर अव्याप्ति वारण करने के लिए साध्याभावाधिकरणता में निरवच्छिन्नत्व का निवेश मथुरानाथ तर्कवागीश ने किया है। उनके अनुसार लक्षण का स्वरूप– **निरवच्छिन्ना या**

**साध्याभावाधिकरणता तद्वन्निष्ठात्यन्ताभावप्रतियोगित्वं व्याप्तिः**। इस प्रकार निवेश करने पर द्रव्य में रहने वाली कपिसंयोगात्मक साध्य के अभाव की अधिकरणता सावच्छिन्ना होती है अतः निरवच्छिन्न साध्याभाव की अधिकरणता गुण ही है तादृश साध्याभावाधिकरणीभूत जो गुण तन्निष्ठ अभाव पद से एतद्वृक्षत्व रूप हेतु का अभाव गृहीत हो जाएगा, तत्प्रतियोगित्व एतद्वृक्षत्व में चला जाएगा। अतः अव्याप्ति नहीं होगी। यद्यपि साध्याभावाधिकरणता में निरवच्छिन्नत्व का निवेश कर कपिसंयोगी एतद्वृक्षत्वात् यहाँ यदि अव्याप्ति दोष का वारण करे तो कपिसंयोगाभाववान् सत्त्वात् यहाँ पर साध्य हुआ कपिसंयोगाभाव, साध्याभाव कपिसंयोगाभावाभाव होगा वह कपिसंयोगस्वरूप होने के कारण अव्याप्य वृत्ति पदार्थ होगा, इसकी निरवच्छिन्नाधिकरणता अप्रसिद्ध हो जाएगी। यदि यह कहा जाए कि कपिसंयोगाभाव सर्वत्र विद्यमान होने के कारण केवलान्वयि है और केवलान्वयि साध्यकस्थल में इस लक्षण की अव्याप्ति ग्रन्थकार को सहमत है, कपिसंयोगिभिन्नं गुणत्वात् यहाँ पर साध्याभाव, कपिसंयोगिभेदाभाव होगा वह भी कपिसंयोगस्वरूप ही होगा, उसकी निरवच्छिन्न अधिकरणता अप्रसिद्ध होगी।

### माथुरी

**न चैवमन्योन्याभावस्य व्याप्यवृत्तितानियमनये द्रव्यत्वाभाववान् संयोगवद्भिन्नत्वादित्यादेरपि सद्धेतुतया तत्राव्याप्तिः, संयोगवद्भिन्नत्वाभावस्य संयोगरूपस्य निरवच्छिन्नवृत्तेरप्रसिद्धेरितिवाच्यम्, अन्योन्याभावस्य व्याप्यवृत्तितानियमनयेऽन्योन्याभावस्याभावो न प्रतियोगितावच्छेदकस्वरूपः, किन्त्वतिरिक्तो व्याप्यवृत्तिः, अन्यथा मूलावच्छेदेन कपिसंयोगिभेदाभावभानानुपपत्तेरिति संयोगवद् भिन्नत्वाभावस्यापि निरवच्छिन्नवृत्तिमत्वात्।**

यहाँ पर मन्तव्य है कि जो लोग अन्योन्याभाव को व्याप्यवृत्ति मानते हैं उनके मत में यह स्थल व्याप्यवृत्तिसाध्यक होने पर भी केवलान्वयि नहीं हो सकता, क्योंकि स्व में स्व का भेद स्वीकार नहीं किया जाता, अतः कपिसंयोगिभिन्नं गुणत्वात् इस अव्याप्ति को

केवलान्वयिसाध्यकस्थलीय अव्याप्ति नहीं कह सकते। इस पर यह कहा जाता है कि अन्योन्याभाव को जो लोग व्याप्यवृत्ति मानते हैं उनके मत में घटादिभेदाभाव के घटत्वस्वरूप होने पर भी कपिसंयोगिभेदाभाव कपिसंयोगस्वरूप नहीं होता किन्तु अतिरिक्त अभाव रूप ही स्वीकार किया जाता है तथा उसकी निरवच्छिन्नाधिकरणता द्रव्य में प्रसिद्ध हो जाती है, उस द्रव्य में गुणत्वात्मक हेतु का अभाव मिलने से कपिसंयोगिभिन्नं गुणत्वात् यहाँ पर अव्याप्ति वारित हो जाएगी।

जिस प्रकार से अव्याप्यवृत्ति साध्यकस्थल में अव्याप्ति वारण करने के लिए साध्याभावाधिकरण में निरवच्छिन्नत्व का निवेश किया गया है उसी प्रकार अव्याप्यवृत्ति हेतुक पृथिवी कपिसंयोगात् इत्यादि स्थल में अतिव्याप्ति वारण करने के लिए साध्याभावाधिकरण निष्ठ अभाव को भी निरवच्छिन्न वृत्तिमान् कहना चाहिए। ऐसा कहने पर लक्षण का स्वरूप इस प्रकार होगा– **निरवच्छिन्ना या यावत् साध्याभावाधिकरणता तद्वन्निष्ठ निरवच्छिन्नवृत्तिमान् योऽभावः तत्प्रतियोगित्वं व्याप्तिः।**

लक्षणघटक साध्याभावाधिकरण निष्ठाभाव में यदि निरवच्छिन्न वृत्तिमत्त्व का निवेश नहीं करेंगे तो पृथिवीत्वाभावाधिकरण जलनिष्ठ अभाव पद से कपिसंयोगात्मक हेतु का अभाव भी गृहीत हो जाएगा, तत्प्रतियोगित्व कपिसंयोग में रह जाने से इस लक्षण की अतिव्याप्ति हो जाएगी। जब तादृशाभाव में निरवच्छिन्न वृत्तिमत्व का प्रवेश कर देंगे तब पृथिवीत्वाभावाधिकरण जल में निरवच्छिन्न वृत्तिमान् अभाव पद से कपिसंयोगाभाव गृहीत नहीं हो सकेगा। जल में देश, काल के भेद से कपिसंयोग विद्यमान है। अतः जल में रहने वाला निरवच्छिन्न अभाव कपिसंयोगात्मक हेतु का अभाव निरवच्छिन्न वृत्तिमान् नहीं होगा किन्तु तादृश जल में निरवच्छिन्न वृत्तिमान् अभाव घटत्वाभाव ही होगा, तत्प्रतियोगित्व घटत्व में रहेगा न कि कपिसंयोग में, अतः अतिव्याप्ति नहीं होगी।

**माथुरी**

**वस्तुतस्तु सकलपदमत्राशेषपरम्, न त्वनेकपरम्, एतद्घटत्वाभाववान् पटत्वादित्याद्येकव्यक्तिविपक्षके साध्या-**

भावाधिकरणस्य यावत्वाप्रसिद्ध्या अव्याप्त्यापत्तेः, तथा च किञ्चिदनवच्छिन्नाया निरुक्तसाध्याभावाधिकरणताया व्यापकीभूतो योऽभावः, हेतुतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नतत्प्रतियोगितावच्छेकहेतुतावच्छेकवत्वं लक्षणार्थः।

“न च सत्वादिसामान्याभावस्यापि प्रमेयत्वादिना निरुक्तसाध्याभावाधिकरणताया व्यापकत्वात् द्रव्यं सत्त्वादित्यादावतिव्याप्तिः। तद्वन्निष्ठान्योन्याभावप्रतियोगितानवच्छेदकत्वं व्यापकत्वमित्युक्तौ तु निर्धूमत्ववान् निर्वह्नित्वादित्यादावव्याप्तिः, निर्वह्नित्वाभावानां वह्निव्यक्तीनां सर्वासामेव चालनीयन्यायेन निर्धूमत्वाभावाधिकरणतावन्निष्ठान्योन्याभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वादिति वाच्यम्, तादृशाधिकरणताया व्यापकतावच्छेदकं हेतुतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नयद्धर्मावच्छिन्नाभावत्वं तद्धर्मवत्वस्य विवक्षितत्वात्।

व्यापकतावच्छेदकत्वन्तु तद्वन्निष्ठात्यन्ताभावप्रतियोगितानवच्छेकत्वम्, न तु तद्वन्निष्ठप्रतियोगिव्यधिकरणाभावप्रतियोगितानवच्छेदकत्वम्, तद्वति निरवच्छिन्नवृत्तिमान् योऽभावस्तत्प्रतियोगितानवच्छेदकत्वं वा, प्रकृतव्यापकतायां प्रतियोगिवैयधिकरण्यस्य निरवच्छिन्नवृत्तित्वस्य वा प्रवेशे प्रयोजनविरहात्। तेन पृथिवी कपिसंयोगादित्यादौ नातिव्याप्तिः। कपिसंयोगाभावत्वस्य निरुक्तव्यापकतावच्छेदकत्वविरहादित्येव परमार्थः।

यहाँ पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि पृथिवी कपिसंयोगात् में अतिव्याप्ति वारण करने के लिए साध्याभावाधिकरण निष्ठाभाव में निरवच्छिन्न वृत्तिमत्व का निवेश करेंगे तो “द्रव्यत्वाभाववान् संयोगवद् भिन्नत्वात् यहाँ पर द्रव्यत्व स्वरूप जो द्रव्यत्वाभावाभाव साध्याभाव है, उसका निरवच्छिन्नाधिकरण जो द्रव्य है, उसमें संयोगस्वरूप

संयोगवद्भिन्नत्वाभावरूप जो हेत्वभाव है, वह द्रव्य में अव्याप्यवृत्ति होकर रहता है, अतः निरवच्छिन्नवृत्तिमदभाव पद से उस अभाव का ग्रहण नहीं हो सकेगा। अतः द्रव्यत्वाभाववान् संयोगवद्भिन्नत्वात् इस स्थल में अव्याप्ति दोष होगा। यहाँ भी जो समाधान कपिसंयोगिभिन्नं गुणत्वात् में है वही समाधान यहाँ भी हो सकेगा। यहाँ भी अन्योन्याभाव को व्याप्यवृत्तित्व स्वीकार करने पर संयोगवद्भिन्नत्वाभाव रूप हेत्वभाव संयोगात्मक प्रतियोगितावच्छेदक स्वरूप नहीं हो सकेगा किन्तु अतिरिक्त अभावस्वरूप ही रहेगा। अथ च वह अभाव व्याप्यवृत्ति होगा। अतः साध्याभावाधिकरणतावन्निष्ठ निरवच्छिन्नवृत्तिमदभाव पद से संयोगवद् भिन्नत्वाभाव का भी ग्रहण हो जाने के कारण अव्याप्ति नहीं होगी।

प्रकृत लक्षण में यह भी विचारणीय है कि लक्षणघटकीभूत सकल पद अनेकार्थक है अथवा अशेषार्थक है। यदि सकल पद को अनेकार्थक मानेंगे तो "एतद् घटत्वाभाववान् पटत्वात्" इस एक व्यक्ति विपक्षकस्थल में एतद्घटत्वाभावाभावरूप साध्याभाव का अधिकरण चूँकि एक एतद्घट है उसमें सकल पदार्थ अनेकत्व अप्रसिद्ध हो जाएगा।

अशेष अर्थ करने पर समस्त साध्याभावाधिकरण लब्ध होता है। जहाँ अनेक साध्याभावाधिकरण लब्ध होता है। जहाँ अनेक साध्याभाव के अधिकरण हैं वहाँ सकल साध्याभावाधिकरण पद से समस्त साध्याभावाधिकरण का बोध होगा एवं जहाँ साध्याभाव का अधिकरण एक ही है वहाँ सकल साध्याभावाधिकरण से उसी का बोध कराएगा। अतः किसी प्रकार की अनुपपत्ति नहीं होगी।

अथ सकल पद का यावत् अर्थ नहीं करके अशेष अर्थ करेंगे तब लक्षण का स्वरूप–निरवच्छिन्न साध्याभावाधिकरणता का व्यापकीभूत जो अभाव तत्प्रतियोगितावच्छेदक हेतुतावच्छेदकवत् ही व्याप्ति का लक्षण बनेगा।

पर्वतो वह्निमान् धूमात् यहाँ पर निरवच्छिन्न वह्न्यभावाधिकरणता जलहृद में है, तादृश जलहृद निष्ठ अधिकरणता का व्यापकीभूत अभाव धूमाभाव हो गया तत्प्रतियोगित्व धूम में चला गया, अतएव लक्षण समन्वय हो गया।

हेत्वभाव में साध्याभावाधिकरणताव्यापकत्व साध्याभावाधिकरणता-वन्निष्ठात्यन्ताभावाप्रतियोगित्व रूप है। जैसे–वह्न्यभावाधिकरणतावत् जलह्रदादि, तन्निष्ठात्यन्ताभाव पद से धूमाभावो नास्ति यह अभाव नहीं मिलेगा क्योंकि इस अभाव का प्रतियोगी धूमाभाव ही जलह्रद में बैठा हुआ है किन्तु घटाभाव होगा उसका प्रतियोगी घट होगा, अप्रतियोगी धूमाभाव हो जाएगा। अतः धूमाभाव वह्न्यभावाधिकरणता का व्यापक अभाव हुआ तत्प्रतियोगित्व धूम में चला गया। अतः इस लक्षण का समन्वय हो जाएगा।

यद्यपि "द्रव्यं सत्वात्" यहाँ पर सत्ताभाव रूप हेत्वभाव प्रमेयत्वेन द्रव्यत्वाभावाधिकरणता का व्यापक हो जाएगा, तत्प्रतियोगित्व के सत्ता में रहने से अतिव्याप्ति होगी। यदि व्यापकत्व को साध्याभावाधिकरणतावन्निष्ठा-न्योन्याभावप्रतियोगितानवच्छेदकत्व रूप कहें तब "निर्धूमत्ववान् निर्वह्नित्वात्" यहाँ पर अव्याप्ति होगी। क्योंकि निर्धूमत्वाभावाधिकरण जो पर्वतादि हैं उसमें समस्त निर्वह्नित्वाभावस्वरूप वह्नि व्यक्ति, उन सभी के अधिकरणों का भेद चालनीयन्याय से सकल निर्धूमत्वाभावाधिकरण पर्वतादि में मिल जाएगा। अतः निर्धूमत्व रूप साध्य के अभाव का अधिकरण जो पर्वतादि, तन्निष्ठान्योन्याभाव पद से तत्तत् निर्वह्नित्वाभाववान् न इस अन्योन्याभाव के गृहीत हो जाने के कारण निर्वह्नित्व रूप हेतु का अभाव जो कि वह्नि स्वरूप होता है वह निर्धूमत्वाभावाधिकरणतावन्निष्ठान्योन्याभाव का प्रतियोगितावच्छेदक हो जाएगा, अनवच्छेदक हेत्वभाव नहीं होगा। अतः निर्धूमत्वाभाववान् निर्वह्नित्वात् यहाँ अव्याप्ति हो जाएगी। इस दोष के परिहार के लिए "साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्न साध्यता-वच्छेदकावच्छिन्न साध्यनिष्ठ प्रतियोगिताकाभावत्वावच्छिन्न यावदधिकरणताया व्यापकतावच्छेदकं यद्धर्मावच्छिन्नाभावत्वं तद्धर्मवत्वम्" ऐसा लक्षण करेंगे।

एतावता लक्षण करने पर "वह्निमान् धूमात्" यहाँ पर संयोग सम्बन्ध से वह्न्यभाव की जो जलह्रदादि निष्ठ यावत् अधिकरणता तद्वन्निष्ठ अत्यन्ताभाव धूमत्वावच्छिन्नाभावो नास्ति यह अभाव नहीं मिलेगा, घटो नास्ति अभाव मिलेगा, तत्प्रतियोगितावच्छेदक घटत्व, अनवच्छेदक धूमत्वावच्छिन्नाभावत्व, तद्धर्मवत्त्व धूम में चला गया अतः लक्षण समन्वय

हो गया। इसी प्रकार निर्धूमत्ववान् निर्वह्नित्वात् यहाँ पर धूम स्वरूप साध्याभाव का जो यावदधिकरण पर्वतादि है तन्निष्ठाभाव पद से निर्वह्नित्वावच्छिन्नाभावो नास्ति यह अभाव नहीं लिया जा सकता, क्योंकि साध्याभावाधिकरण पर्वतादि में निर्वह्नित्वाभाव अर्थात् वह्नि ही बैठा हुआ है किन्तु घटाद्यभाव ही लिया जाएगा, तत्प्रतियोगितावच्छेदक घटत्व, अनवच्छेदक निर्वह्नित्वावच्छिन्नाभावत्व होगा, तद्धर्म के निर्वह्नित्व में रहने से अव्याप्ति नहीं होगी।

इस प्रकार मथुरानाथ ने हेत्वभाव में प्रतियोगिवैयधिकरण्य निवेश न कर यद्धर्मावच्छिन्नाभावत्व में साध्याभावाधिकरणता व्यापकतावच्छेदकत्व का निवेश करके दोषों का वारण किया है।

जगदीश तर्कालंकार ने दीधितिकार के अनुसार साध्याभाव तथा हेत्वभाव दोनों में प्रतियोगिवैयधिकरण्य का निवेश कर अव्याप्यवृत्ति साध्यक तथा अव्याप्यवृत्ति हेतुक दोनों प्रकार के स्थलों में अव्याप्ति का वारण किया है।

इस प्रकार पञ्चलक्षणी ग्रन्थ के चतुर्थलक्षण की व्याख्या पूर्ण हुई।

**।। इति शम् ।।**

**चतुर्थ लक्षण का हिन्दी व्याख्यान सम्पन्न**

अन्वीक्षानयमाकलय्य गुरुभिर्ज्ञात्वा गुरूणां मतम्
चिन्तादिव्यविलोचनेन च तयोः सारं विलोक्याखिलम्।
तन्त्रे दोषगणेन दुर्गमतरे सिद्धान्तदीक्षागुरुः
गङ्गेशस्तनुते मितेन वचसा श्रीतत्त्वचिन्तामणिम्॥

–आचार्यः गङ्गेशोपाध्यायः

# पञ्चमं व्याप्तिलक्षणम्

## पञ्चमलक्षणहिन्दीव्याख्याकारः

प्रो० प्रभाकरप्रसादः

# साध्यवदन्यावृत्तित्वम्